## विचार बिन्दु

**जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते। –वेदव्यास**

# जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण है जलाशय क्षेत्र

आर्द्रभूमि या वेटलैंड वह क्षेत्र होता है जहां जल भरा रहता है। जल मानव और जीव जंतु दोनों के लिए अमृतदायी है। बिना जल के सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। जल ही जीवन है। मानव और जीव जंतुओं का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है। आर्द्रभूमि एक ऐसा स्थान है जहां पौधे और पशु प्रजातियों की घनी विविधता पाई जाती है और ये जैव विविधता से भी समृद्ध होता हैं। भारत में 19 प्रकार की आर्द्रभूमियां हैं जिनमें लगभग 4.6 प्रतिशत भूमि आर्द्रभूमि के रूप में है जो 15.26 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करती है। भारत में आर्द्रभूमि ठंडे और शुष्क इलाकों से लेकर मध्य भारत के कटिबंधीय मानसूनी इलाकों और दक्षिण के नमी वाले इलाकों तक फैली हुई है। इस क्षेत्र में भरपूर नमी पाई जाती है जिसके अनेक लाभ हैं। वेटलैंड्स जंतु ही नहीं बल्कि पौधों की दृष्टि से भी यह जरूरी है। आर्द्रभूमि जलीय एवं स्थलीय जैव-विविधताओं का एक ऐसा मिलन स्थल है तथा यहाँ वन्य प्राणी प्रजातियों व वनस्पतियों की प्रचुरता पाई जाती है। जैव विविधता के क्षरण को लेकर देश और दुनियां में गहरी चिंता व्यक्त की जा रही है। आर्द्रभूमि और जैव विविधता का चोली-दामन का साथ है। जैव-विविधता से हमारे रोजमर्रा की जरूरतों यथा रोटी, कपड़ा, मकान, ईधन, औषधियों आदि आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यह पारिस्थितिक संतुलन को बनाये रखने तथा खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने में भी सहायक होती है। पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक स्थिरता, फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ तपन, बाढ़, सूखा, भूमि क्षरण आदि से बचाव के लिए जैव-विविधता संरक्षण समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

वर्तमान में देश में कुल 42 रामसर आर्द्रभूमि स्थल चिह्नित हैं। भारत में स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में देश में 13,26,677 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हुए कुल 75 रामसर स्थलों को बनाने के लिए रामसर स्थलों की सूची में 11 और आर्द्रभूमि शामिल हो गई हैं। आर्द्रभूमि में मैंग्रोव, दलदल, नदियाँ, झीलें, डेल्टा, बाढ़ के मैदान और बाढ़ के जंगल, चावल के खेत, प्रवाल भित्तियाँ, समुद्री क्षेत्र (6 मीटर से कम ऊँचे ज्वार वाले स्थान) के अलावा मानव निर्मित आर्द्रभूमि जैसे- अपशिष्ट जल उपचार तालाब और जलाशय आदि शामिल होते हैं। आर्द्रभूमि में सर्वाधिक उत्पादकता होने के कारण इनका सामाजिक-आर्थिक एवं पारिस्थितिकी महत्व अत्यधिक है।

**आर्द्र भूमि, वर्षावनों की तुलना में कार्बन डाइऑक्साइड की चार गुना अधिक मात्रा को सोखती हैं। हमें इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है। आर्द्रभूमियों के एक नहीं अनेक फायदे है। आर्द्रभूमि मानव और पृथ्वी के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। एक बिलियन से अधिक लोग जीवनयापन के लिये उन पर निर्भर हैं।**

केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, ग्रीनहाउस गैस को ग्लोबल वार्मिंग के साथ-साथ भूमि-उपयोग और भूमि-क्षेत्र परिवर्तन के लिये प्रेरित कारकों के रूप में भी ज़िम्मेदार ठहराया गया है। तापमान और गर्मी वितरण में इस तरह के क्षेत्रीय पैमाने पर बदलाव का असर वर्षा पैटर्न पर भी पड़ेगा। इसलिये भारत के प्राकृतिक पारिस्थितिकी प्रणालियों, मीठे पानी के संसाधनों और कृषि के लिये खतरा बढ़ रहा है, जो अंततः जैवविविधता, खाद्य, जल सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा समठा रूप से समाज को प्रभावित करते हैं। आर्द्रभूमि प्राकृतिक जैव विविधता के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। यह पक्षियों और जानवरों की विलुप्तप्रायः और दुर्लभ प्रजातियों, देशज पौधों और कीड़ों को उपयुक्त आवास उपलब्ध कराती हैं। हम प्रकृति द्वारा जल की पुनःपूर्ति के तुलना में अधिक जल का उपयोग कर रहे हैं, और यह जल और सारा जीवन हेतु आर्द्रभूमि पर निर्भर रहने वाले पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर रहा हैं। आर्द्रभूमियां हमारे प्राकृतिक पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये बाढ़ की घटनाओं में कमी लाती हैं, तटीय इलाकों की रक्षा करती हैं, साथ ही प्रदूषकों को अवशोषित कर पानी की गुणवत्ता में सुधार करती हैं। एक समृद्ध फूड-वेब समृद्ध जैव-विविधता का परिचायक है और यही कारण है कि इसे बायोलॉजिकल सुपर मार्केट कहा जाता है। इस भूमि में उपयोगी वनस्पतियाँ एवं औषधीय पौधे भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह प्रदूषित पानी को साफ करती है। तटरेखाओं की रक्षा करती है और बाढ़ के खतरे को कम करने में मदद करती है। साथ ही जल चक्र के कामकाज को सुनिश्चित करती है। भूजल स्तर को बढ़ाने में भी आर्द्रभूमियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा आर्द्रभूमि जल को प्रदूषण से मुक्त बनाता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में आर्द्रभूमियों की महत्ता महत्वपूर्ण है। आर्द्रभूमियों को अक्सर एक बेकार व दलदली क्षेत्र के रुप में देखा जाता है, लेकिन ये आर्द्रभूमियाँ जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहद महत्वपूर्ण होती हैं। आर्द्रभूमियाँ प्राकृतिक स्पंज की तरह हैं और अतिरिक्त पानी सोखती हैं। साथ ही, शुष्क महीनों के दौरान अनेक महत्वपूर्ण नदियों के प्रवाह को नियंत्रित करती हैं। आर्द्रभूमियाँ, वर्षावनों की तुलना में कार्बन डाइऑक्साइड की चार गुना अधिक मात्रा को सोखती हैं। हमें इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है। आर्द्रभूमियों के एक नहीं अनेक फायदे है। आर्द्रभूमि मानव और पृथ्वी के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। एक बिलियन से अधिक लोग जीवनयापन के लिये उन पर निर्भर हैं और दुनिया की 40 प्रतिशत प्रजातियाँ आर्द्रभूमि में रहती हैं तथा प्रजनन करती हैं। बढ़ते शहरीकरण, बाँध निर्माण, अवांछित मानवीय गतिविधियों और जलाशयों में अपशिष्ट के प्रवाह के कारण आर्द्रभूमियां नष्ट हो रही हैं। आर्द्रभूमियों की रक्षा के लिए हमें मिलजुल कर प्रयास करने चाहिए।

यह क्षेत्र सुरक्षित रहा तो मानव के साथ- साथ जीव-जंतु और वनस्पतियों के लिए भी बेहद उपयोगी साबित होगा।

**–अतिथि संपादक,**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

# 'पैदायशी पक्षपाती'

शीतल पथिक

1922 में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कंपनी के रूप में स्थापित व 1927 में ब्रिटिश ब्रोडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के रूप में पुनर्गठित, बीबीसी ब्रिटेन का सबसे पुराना प्रसारक है। जिसका कार्यक्षेत्र ब्रिटिश औपनिवेशिक देशों, विशेष कर एशिया में विस्तृत है।

अपनी स्थापना के समय से ही कई विषयों में विवादों से घिरा रहा है, चाहे फिर वह कोई अंतरराष्ट्रीय मुद्दा हो या फिर किसी देश के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप की बात हो। राजनीति, धर्म, नैतिकता, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के विषयों पर बीबीसी के कई लेख व रिपोर्ट्स पर अनेक देशों में विवाद हमेशा देखा जा सकता है। फंड व स्टाफिंग के मामलों मे भी इसके अनेक झगड़े है। विवाद उत्पन्न करने वाले एवं कई प्रसंगो में पक्षपाती समाचार, कवरेज व एजेंडा युक्त न्यूज स्टोरी वाली बीबीसी की छवि समय-समय पर सामने आती रही है। बीबीसी में कार्य करने वाले कर्मचारी, उच्च स्तर के कई अधिकारी स्वयं इसके गैर जिम्मेदाराना व वाममार्गी केंद्रित रवैये की निंदा करते नजर आते हैं। लंबे समय तक बीबीसी में समाचार प्रस्तुतकर्ता पीटर सिंसस इस मामले में कहते हैं कि ''बीबीसी के मूल में, इसके डीएनए में, सोचने का एक तरीका है, जो दृढ़ता से वामपंथी है।''

एक और बीबीसी प्रस्तुतकर्ता एंड्रयू मार ने इस बारे में कहा की 'बीबीसी निष्पक्ष या तटस्थ नहीं है।' भारत के संदर्भ में देखा जाए तो 1940 में स्थापित 'बीबीसी हिंदी' मीडिया चैनल भी इस मामले में अपनी मुख्य संस्था का अनुगामी लगता है। वाम विचार केंद्रित और घृणित मानसिकता के चलते बीबीसी ने भारत और भारतीयता व ना केवल सामाजिक, राजनीतिक बल्कि पारिवारिक मूल्यों पर भी गलत रिपोर्टिंग द्वारा प्रहार के प्रयास समय-समय पर किए हैं। गलत नैरेटिव गढ़ने और अपने असामाजिक और अनैतिक हथकंडो द्वारा भारतीय संस्कृति को गलत तरीके से प्रस्तुत करने के प्रयासों में बीबीसी लंबे समय से लगा रहा है। राष्ट्रीयता में विश्वास करने वाले व अपनी संस्कृति को गर्व से अपनाने वाले भारतीयों को उग्रवादी व चरमपंथी कहना भी इसकी दूषित मानसिकता का परिचायक है।

1968-71 के बीच तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लगाया गया बेन इसका प्रमाण है। परंतु आश्चर्यजनक बात है की वर्तमान में विपक्ष की भूमिका में कांग्रेस नेतृत्व इसका समर्थन कर रहा है। इसके और भी कई उदाहरण समय-समय पर सामने आते रहे हैं, जैसे बीबीसी के लिए तीस वर्षों तक कार्य करने वाले भारतीय पत्रकार मार्कटली का त्यागपत्र व इस संबंध में भारत मे उनसे हाथापाई के मामले। अपने कार्यकाल के दौरान दक्षिण एशिया की प्रमुख घटनाओं के साथ-साथ भारत-पाक संघर्ष, भोपाल गैस त्रासदी, ऑपरेशन ब्लूस्टार, जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को कवर करने वाले टली ने 1994 में बीबीसी के तत्कालीन महानिदेशक जॉन बर्टी के साथ बहस के बाद बीबीसी को 'भय द्वारा चलाने' व बीबीसी पर 'अपारदर्शी संस्था' होने का आरोप लगाया।

इसके अलावा 2008 के मुंबई हमलों के बाद आरोपियों के लिए 'आतंकवादी' के स्थान पर 'बंदूकधारी' शब्द का प्रयोग किया गया। यह कृत्य बीबीसी के रवैया और इसकी पत्रकारिता में एकतरफा झुकाव को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग द्वारा अपराध को बढ़ावा देने वाला पत्रकारिता का गिरा हुआ स्तर बीबीसी में स्पष्ट देखा जा सकता है। हालांकि हमारे ही देश में दीमक की तरह काम कर रहा एक तबका बीबीसी के इस प्रकार के प्रत्येक विवाद में बीबीसी के साथ ढाल की तरह खड़ा रहता है। और उनका इस तरह बचाव में आना कोई बड़ी बात भी नहीं क्योंकि दोनों का एक ही लक्ष्य है, भारत व भारतीयता पर प्रहार। परंतु यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में देखा जाए तो वर्ष भर पहले के एक प्रकरण से बीबीसी के इस रवैया को और अच्छे से समझा जा सकता है, जहां स्टैंडअप कॉमेडी के नाम पर हिंदू संस्कृति पर प्रहार व पाकिस्तान प्रेम का राग अलापने वाले कुणाल कुमार और मुनव्वर फारुखी जैसे लोगों के बचाव में बीबीसी अपना पक्षपाती इंटरव्यू जारी करता है।

अभी कुछ ही समय पूर्व दीपावली पर घर की सफाई व महिलाओं के संबंध में बीबीसी का लेख भी सब ने देखा कि किस तरह हमारे उत्सवों का अवमूल्यन करने का कुत्सित प्रयास व भारतीय परम्परा और संस्कृति को कमतर बताने के लिए यह बिना तर्कों की बातें करने से भी बाज नहीं आता।

परंतु अब लोग बीबीसी के इन षड्यंत्रों को समझने लगे हैं, क्योंकि बीबीसी की इस पत्रकारिता के विपरीत विश्व भर में बनी भारत की लोकप्रिय छवि को लोग देख रहे हैं। चाहे वह विश्व की टॉप पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने की बात हो, जलवायु परिवर्तन, विश्व शांति जैसे अनेक मुद्दों में भारत की अहम भूमिका हो या फिर जी-20 की अध्यक्षता। वैश्विक अर्थव्यवस्था, राजनीति व अन्य सभी पहलुओं में भारत के स्टैंड को लोग समझ रहे हैं। अतः बीबीसी एक बार फिर अपने एजेंडा के तहत एक नई डॉक्यूमेंट्री के साथ सामने आया है, ताकि आंतरिक अशांति के द्वारा फिर से भारत की प्रगति से ध्यान भटकाया जा सके। और बीबीसी के मैदान में उतरते ही भारत के तमाम लेफ्ट- लिबरल गेंग व भारत विरोधी संगठन एक बार फिर इसके साथ मैदान में आ गए। प्रतिबंध के बाद भी टुकड़े-टुकड़े समूह द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयो में यह दिखाई जा रही है। डॉक्यूमेंट्री का विषय लंबा है, उस पर अलग से चर्चा हो सकती है, फिर भी यहां एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि हर बात में लोकतंत्र की बात करने वाले व लोकतंत्र को खतरे में बताने वाले भारत के ही कुछ लोग इस विषय पर देश में अशांति फैला रहे हैं जिसे सुप्रीम कोर्ट जो कि लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, सिरे से खारिज कर चुका है।

बात बीबीसी की है तो इसके पाकिस्तान प्रेम को भी नहीं भुला जा सकता जब भी बीबीसी ने भारत के खिलाफ इस प्रकार की पत्रकारिता की कोशिश की है, पाकिस्तान हमेशा इसके साथ खड़ा दिखाई देता है। वर्तमान में जारी डॉक्यूमेंट्री के संबंध में भी इसे देखा जा सकता है जहां ब्रिटेन के प्रधानमंत्री व कई अन्य मंत्री और आम जनता बीबीसी, जो कि ब्रिटेन का प्रसारक होने के बावजूद भी उसकी निंदा कर चुके हैं। यूएस, फ्रांस व कई अन्य देश जहां बीबीसी के इस कृत्य की निंदा करते नजर आ रहे हैं वहीं पाकिस्तान इसके साथ खड़ा दिखाई देता है। और दूसरी तरफ बीबीसी भी अनेक विवादित मुद्दों पर पाकिस्तान के पक्ष में पत्रकारिता करता देखा जा सकता है पाकिस्तान और अफगानिस्तान के विषय में अमेरिका की मशहूर लेखिका और विशेषज्ञ क्रिस्टीन फेर ने बीबीसी के एक प्रोग्राम में पाकिस्तान को पूरी दुनिया में आग लगने वाला बताया तो बीबीसी एंकर भड़क गई व क्रिस्टीन फेर से ही भिड़ गई। आखिर यह रिश्ता क्या कहलाता है?

बीबीसी की भारत के प्रति यह सोच उसी औपनिवेशिक मानसिकता की ओर संकेत है जो भारत को लगातार मानसिक परतंत्रता की और धकेलने में लगी रहती है। सरकार बीबीसी पर भारत में प्रतिबन्ध लगाए यह सरकार व जागरूक समाज दोनों की जवाबदेही है कि भारत विरोधी विमर्श नहीं बनने दे।

**– शीतल पथिक,**
**युवा लेखिका, धर्मेटा**
**राजसमंद**

# डॉ. विपुल चौधरी के आविष्कार का पेटेंट हुआ

डॉक्टर विपुल चौधरी

- **आविष्कार से दंत चिकित्सा की लागत में कमी और सुलभता बढ़ाने में मदद मिलेगी**

**भीलवाडा,** (निसं)। औद्योगिक नगरी भीलवाड़ा अब मेडीकल हब के रूप में भी अपनी पहचान बनाने लगा है। ज़िले के सबसे बड़े सरकारी महात्मा गांधी हॉस्पिटल के डॉक्टर विपुल चौधरी अपने आविष्कार और डिजाइन के लिए पेटेंट किया गया है। जिसे उन्होंने मेडिकल कॉलेज को समर्पित किया है। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में परेशानी आती है और इलाज की लागत भी बढ़ जाती है। इस आविष्कार से दंत चिकित्सा की लागत में कमी और सुलभता बढ़ाने में काफ़ी मददगार साबित होगा।

उन्होंने बताया कि भीलवाड़ा मेडिकल कॉलेज अब दंत प्रत्यारोपण में किफायती होने के साथ अब समय की बचत भी करेगा। उन्होंने कहा कि यह चिकित्सा जगत लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण होगा जोकि दंत चिकित्सा में काफ़ी कारगर होगा। उन्होंने कहा कि अब तक के इतिहास में इंजीनियरिंग फ़ील्ड या आईटी सेक्टर में हुए अविष्कारों को पेटेंट किया गया है। मैक इन इंडिया के तहत चिकित्सकों के प्रयासों को इससे संबल मिलेगा।

उन्होंने बताया कि 20 साल के लिए उन्हें यह पेटेंट दिया गया है। अभी इस उपकरण का क्लिनिकली टेस्ट शुरू नहीं किया गया है, लेकिन जल्द इसी शुरुआत मरीज़ को गुणवत्तापूर्ण उपचार देने के लिए की जायेगी।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में यह पेटेंट अपने आप में पहला एसा उपकरण होगा जो दंत चिकित्सा में काफ़ी कारगर साबित होगा। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा मेडिकल कॉलेजो में प्रोफ़ेसरों को अब सिर्फ़ पढ़ने के लिए नहीं चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति लाने के भी अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे है। हमने इस उपकरण के लिए एक साल तक मेहनत की है। कई लेवल पर जाँच और परख के बाद भारत सरकार ने हमे इसका पेटेंट दिया है जो ना सिर्फ़ चिकित्सा जगत के लिए बल्कि भीलवाड़ा के लिए भी गौरव की बात है।

# बीकानेर में 27.4 डिग्री के पास पहुंचा पारा

- **पिछले चौबीस घंटे में प्रदेशभर में सबसे कम तापमान चूरू में रहा, जो 5.2 डिग्री सेल्सियस है**

**बीकानेर,** (निसं)। यहां गर्मी की आहट हो गई है। तापमान में उतार-चढ़ाव के बाद अधिकतम पारा तीस डिग्री सेल्सियस के पास पहुंच गया है। इस सीजन की सर्दी लगभग रवानगी ले चुकी है। अब दिसम्बर और जनवरी की जितनी सर्दी नहीं पड़ने वाली है। मौसम विभाग ने भी आने वाले दिनों में मौसम शुष्क बताया है।

पिछले चौबीस घंटे में बीकानेर में अधिकतम तापमान 27.4 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है, जबकि न्यूनतम तापमान 12.4 डिग्री सेल्सियस है। पिछले दिनों की तुलना में अधिकतम पारा लुढ़ का है, इसके बाद भी गर्मी कम नहीं हुई है। रात में न्यूनतम तापमान में फिर दो डिग्री की बढ़ोतरी हो गई है। दोपहर में गर्म कपड़े और सुबह व रात में टोपी पहनने की जरूरत नहीं पड़ रही है। आने वाले दिनों में पारा घटने के बजाय बढ़ सकता है। पिछले चौबीस घंटे में प्रदेशभर में सबसे कम तापमान चूरू में रहा, जो 5.2 डिग्री सेल्सियस है।

कोई भी ऐसा मौसम केंद्र नहीं है, जहां तापमान पांच डिग्री सेल्सियस से कम आंका गया हो। माना जा रहा है कि इस बार गर्मी की आहट समय से पहले हो गई है। आमतौर पर पंद्रह फरवरी के बाद सर्दी कम होती है लेकिन इस बार पहले ही तापमान बढ़ना शुरू हो गया है। इन दिनों सामान्य से ज्यादा पारा है। लगभग सभी जिलों में तापमान सामान्य से एक से तीन डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। वहीं जयपुर में ये चार डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है।

# नुकसान के मुआवजे के लिए धरना-प्रदर्शन

**श्रीगंगानगर,** (निसं)। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत के सदस्यों ने बुधवार को कलेक्ट्रेट पर धरना लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। संगठन सदस्यों का कहना था कि किसानों को पिछले दिनों तेज सर्दी के दौरान सरसों की फसल में पाले से नुकसान हुआ है।

खास बात यह है कि कई जगह सर्वे की कार्रवाई भी नहीं हुई है। ऐसे में किसान परेशान हैं। ग्राहक पंचायत के जिलाध्यक्ष मुकेश गोदारा के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर रहे इन लोगों का कहना था कि जिले में बड़ी संख्या में किसानों ने सरसों की फसल बोई है। सरसों की फसल जब पकाव पर थी, उसी दौरान तेज सर्दी और पाळे से फसलों को नुकसान हो गया। इससे इलाके के खेतों में कई जगह किसानों की मेहनत खराब हो गई है।

इस बारे में किसानों ने कई बार प्रशासन को जानकारी भी दी लेकिन प्रशासन ने इस पर पूरी गंभीरता नहीं दिखाई। इस अवसर पर हुई सभा में संगठन के जिलाध्यक्ष गोदारा ने कहा कि सरकारें किसान की बात नहीं सुन रही हैं। अगर ऐसा हुआ तो किसान के पास अपनी बात सुनाने के लिए ताकत है। प्रदर्शन में इकबाल सिंह, बलदेव सिंह, भरत खोथ, नरसीराम, मनीष, महेंद्रप्रताप सहित कई लोग मौजूद थे।

# डंडों से पीट-पीटकर ऊंट की हत्या

- **ऊंट ने अपने मालिक की जान ले ली थी**

**नोखा,** (निसं)। कस्बे में दर्दनाक घटना सामने आई है। यहां एक परिवार के लोगों ने एक ऊंट को पेड़ से बांधा और डंडों से पीट-पीटकर उसकी जान ले ली। उन्होंने ऊंट के सिर पर तब तक वार किए गए, जब तक उसने दम नहीं तोड़ दिया। इस घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर शेयर हो रहा है।

इसमें देखा जा सकता है कि लोगों ने ऊंट की गर्दन पेड़ में फंसाई और डंडों से उसकी ताबड़तोड़ पिटाई की। कुछ देर तो ऊंट खड़ा रहा, फिर पिटाई के असर से उसकी हालत खराब होने लगी और वह गिर पड़ा। इतनी मार खाकर ऊंट की मौत हो गई। दरअसल, इस ऊंट ने अपनी मालिक की जान ली थी, जिसके बाद लोगों ने ऊंट को मार डाला। ऊंट ने अपने मालिक सोहनराम की जान ले ली थी। सोहनराम परिवार में अकेला कमाने वाला था। उसकी मौत के बाद परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

मामला नोखा के पांचू गांव का है। मृतक सोहनराम नायक (45 साल) के परिजनों ने बताया कि सोहनराम गांव से ऊंट गाड़ी लेकर ढाणी पहुंचा था। वह ऊंट को खेत में ले जा रहा था। इस दौरान ऊंट ने सोहनराम की गर्दन पकड़ ली। सोहनराम ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह छुड़ा नहीं पाया। घटना की जानकारी मिलते ही पड़ोसी भंवरलाल मेघवाल, सोहनराम के पिता मोहनराम मौके पर पहुंचे। लाठियों से ऊंट को दूर करना चाहा, लेकिन ऊंट के मुंह में गर्दन होने से सोहनलाल लहूलुहान हो गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद ग्रामीणों ने जैसे-तैसे ऊंट को कब्जे में लिया। वहीं, घटना के बाद जमा भीड़ ने ऊंट को पीट-पीट कर मार डाला। गुस्साए लोगों का कहना है कि अगर ऊंट जिंदा रहता तो वह और कई लोगों को नुकसान पहुंचाता।

मृतक के बुआ के लड़के नेमाराम नायक ने बताया कि सोहनराम ने 20 दिन पहले ही यह ऊंट खरीदा था। इस कारण उसे ऊंट के स्वभाव की पहचान नहीं थी। ऊंट स्वभाव से हिंसक था। सोहनराम ऊंटगाड़ी चलाकर ही अपने परिवार का गुजारा करता था। सोहनराम के 5 बेटे और 2 बेटियां है। सबसे बड़ा बेटा 18 साल का है। थानाधिकारी मनोज यादव ने बताया ऊंट सोहनराम नायक का पालतू जानवर था। परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

## राशिफल गुरूवार 9 फरवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा फाल्गुनी रात्रि 10:27 तक, सुकर्मा योग सांय 4:45 तक, बव करण सांय 7:11 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज चतुर्थी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:25 पर होगा।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः** शुभ सूर्योदय से 2:34 तक, चर 11:19 से 12:41 तक, लाभ-अमृत 12:41 से 3:25 तक, शुभ 4:48 से सूर्यास्त तक।

**राहूकालः** 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:12, सूर्यास्त 6:10

**मेष**
परिवार में आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**सिंह**
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**धनु**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

**कन्या**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

**मकर**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। खान-पान में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**मिथुन**
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी और व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

**तुला**
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**कुंभ**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

**कर्क**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

**वृश्चिक**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

**मीन**
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

# 'राजस्थानी भाषा बहुत मीठी और अपनत्व की भाषा है प्रधानमंत्री जी'

राजेन्द्र जोशी

देश की राजनीति में राजस्थान चर्चा का विषय बना हुआ है, केन्द्र सरकार की विचारधारा के विपरित सोच की सरकार राजस्थान में सत्ता पर काबिज है। सरकारों के भीतर-बाहर भूचाल तो बना रहता ही है।बरसो पहले राजस्थान विधान सभा ने सर्वसम्मति से राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का आग्रह भारत सरकार से कर चुकी है ।

राजस्थानी संस्कृति और राजस्थानी भाषा की मिठास का कोई सानी नहीं है, यह पूरी दुनिया जानती है, पिछले दिनों मानगढ़ में गुजरात के आदिवासियों को वोट में तब्दील करने के लिए एक बड़ा जलसा हुआ । इस जलसे के माध्यम से गुजरात चुनाव में प्रधानमंत्री को सफलता मिली । कुछ दिनो पहले गुर्जरों को रिझाने की कवायद भी हुई थी।

जोधपुरी सूट और राजस्थानी पगड़ी का तो कहना ही क्या, देश के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों के सर पर राजस्थानी पगड़ी शोभायमान हुआ करती है। इन सबके साथ ही देश की दो बड़ी पंचायत है लोकसभा और राज्यसभा उनके प्रमुख भी राजस्थान से आते है।

पर्यटन की दृष्टि से पुराने रजवाड़ों की शान शौकत देखने के लिए भी सबसे पहले राजस्थान का चयन किया जाता है, राजस्थान की हवेलियां राजस्थान के गढ़ पूरी दुनिया को आकर्षित करते रहे हैं। इसी प्रकार राजस्थान का खान-पान भी लोगों के जुबान पर रहा है और अब तो राजस्थानी व्यंजनों का स्वाद भी पूरे देश को और खासकर प्रधानमंत्री जी एवं उनकी पूरी सरकार को मीठा लगने लगा है, मोटे अनाज के राजस्थानी व्यंजनों का स्वाद दिल्ली में प्रधानमंत्री जी एवं उनके मंत्रिमंडल के साथ सभी सांसदों ने अपने खाने में सामूहिक रूप से राजस्थानी व्यंजन बनवाएं, खाए और उसकी तारीफ की । तारीफ तो करनी थी पहले से पता था कि राजस्थानी व्यंजन बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

**भारतीय जनता पार्टी के लिए**

राजनीति में सफलता का मार्ग राजस्थान से होकर निकलता है, भारत सरकार ने मोटे अनाज के व्यंजनों का भोज आयोजित किया इस भोज में राजस्थानी खाने का स्वाद लिया गया बाजरे की रोटी, खिचड़ी ,राबड़ी, हल्दी की सब्जी, कैर- सांगरी, काचरी व ग्वार फली की सब्जी को चटकारे लेकर भारत सरकार ने खाया।

स्वस्थ रहने के लिए राजस्थान का मोटा अनाज काम आता है, वोट बटोरने के लिए राजस्थान सबसे पहले याद आता है, नेतृत्व में सहयोगी के रूप में राजस्थान के लोग भरोसेमंद होते है, परन्तु उन राजस्थानी सहयोगियों और नेताओं की भाषा को सम्मान क्यों नहीं मिल रहा। इन सबके बावजूद राजस्थानी भाषा को मान्यता देने में भारत सरकार चुप क्यों है। लोकसभा और राज्यसभा में कुल मिलाकर हमारे 35 सांसद राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हमारे ये 35 सांसद प्रधानमंत्री जी को यह क्यों नहीं बताते कि प्रधानमंत्री जी आपके लिए राजस्थान इतना महत्वपूर्ण है तो उसकी जुबान का ताला भी खोल दीजिए। राजस्थानी भाषा भी बहुत प्यारी है उस राजस्थानी का सम्मान कीजिए। उसका भी स्वाद हमें लेने दीजिए। कहना चाहिए कि राजस्थानी भाषा भी बहुत मीठी और अपनापन लिए है। इस राजस्थानी भाषा की बात सुन लीजिए, पढ़कर देख लीजिए राजस्थानी संस्कृति को आप नजदीक से देख रहें है आपको लगता है कि दुनिया की सबसे मीठी राजस्थानी भाषा है। इसमें कळेस नहीं राजस्थानी का मीठा स्वाद है। स्वाद के मान्यता क्यों नहीं।

लेखक राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कोषाध्यक्ष है।